Shreemad Bhagawad Geeta: श्रीमद् - भगवद् - गीता

अथ पुरुषोत्तमयोगो नाम पञ्चदशोऽध्यायः॥

श्री भगवान् उवाच।

ऊर्ध्वमूलम् अधःशाखम् अश्वत्थम् प्राहुः अव्ययम्।

छन्दांसि यस्य पर्णानि यः तम् वेद सः वेदवित्॥ १५-१॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
ऊर्ध्वमूलम्	Urdhvamulam	rooted above	आदि पुरुष परमेश्वररुप उपर मूलवाले और	मूळ वरती असणाऱ्या
अधःशाखम्	AdhaHshaakham	with branches below	ब्रह्मारुप मुख्य नीचे शाखावाले जिस	खाली फांद्या असणाऱ्या
अश्वत्थम्	Ashvattham	Peepal tree	संसाररुप पीपल के वृक्ष को	(संसाररुपी) अश्वत्थ (पिंपळ) वृक्षाला
प्राहुः	praahuH	(they) speak of	कहते हैं तथा	म्हणतात
अव्ययम्	Avyayam	indestructible	अविनाशी	अविनाशी
छन्दांसि	Chandansi	metres of hymns	छन्द	छन्द
यस्य	Yasya	of which	जिसके	ज्याची
पर्णानि	Parnani	leaves	पत्ते कहे गये हैं	पाने
यः	YaH	who	जो पुरुष मूलसहित	जो
तम्	Tam	that	उस संसाररुप वृक्ष को	त्याला
वेद	Veda	knows	तत्व से जानता है	(तत्वतः) जाणतो
सः	SaH	He	वह	तो
वेदवित्	Vedavit	Knower of the Vedas	वेद के तात्पर्य को जाननेवाला है	वेदांचे तात्पर्य जाणणारा आहे

अन्वय :- श्री भगवान् उवाच - छन्दांसि यस्य पर्णानि (सन्ति तम्) अश्वत्थम् ऊर्ध्वमूलम् अधःशाखम् अव्ययम् प्राहुः । यः तम् वेद , सः वेदवित् (इति उच्यते) ॥ १५ - १॥

English translation:-

The blessed Lord said, "They speak of an imperishable Asvattha (Peepal) tree with its roots above and branches below. Its leaves are the Vedas; he who knows it is the knower of the Vedas.

हिन्दी अनुवाद :-

श्री भगवानने कहा , " आदि पुरुष परमेश्वररुप उपर मूलवाले और ब्रह्मारुप मुख्य नीचे शाखावाले जिस संसाररुप पीपल के वृक्ष को अविनाशी कहते हैं तथा वेद जिसके पत्ते कहे गये हैं; उस संसाररुप वृक्ष को जो पुरुष मूलसहित तत्व से जानता है, वह वेद के तात्पर्य को जाननेवाला है । "

मराठी भाषान्तर :-

श्री भगवान म्हणाले , " सर्व छंद ही ज्याची पाने आहेत त्या अश्वत्थ (पिंपळ) वृक्षाचे मूळ वर आहे आणि शाखा खाली पसरलेल्या आहेत . त्याला अविनाशी म्हणतात . जो हे जाणतो त्यालाच वेदांचा जाणकार असे म्हणतात . "

विनोबांची गीताई :-

खालीं शाखा वरी मूळ नित्य अश्वत्थ बोलिला

ज्याच्या पानांमधें वेद ज़ाणे तो वेद ज़ाणतो ॥ १५ - १॥

अधः च ऊर्ध्वम् प्रसृताः तस्य शाखाः गुणप्रवृद्धाः विषयप्रवालाः ।

अधः च मूलानि अनुसंततानि कर्मानुबन्धीनि मनुष्यलोके ॥ १५ - २ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
अधः	AdhaH	below	नीचे	खाली
च	Cha	and	और	आणि
ऊर्ध्वम्	Urdhvam	above	ऊपर	वरती
प्रसृताः	PrasrutaaH	spread	सर्वत्र फैली हुई हैं तथा	पसरलेल्या आहेत
तस्य	Tasya	its	उस संसारवृक्ष की	त्या (संसारवृक्षाच्या)
शाखाः	ShaakhaaH	branches	देव मनुष्य और तिर्यक् आदि योनिरुप शाखाएँ	फांद्या
गुणप्रवृद्धाः	Guna-pravrudhaH	nourished by the Satva, Rajas and Tamas Gunas	तीनों गुणोंरुप जल के द्वारा बढ़ी हुई एवं	तीन गुणरुपी पाण्याने वाढलेल्या
विषयप्रवालाः	Vishaya-pravaalaaH	sense objects are its buds	विषय भोग-रुप कोंपलोंवाली	विषयभोगरुपी कोवळी पाने असणाऱ्या
अधः	AdhaH	below	नीचे	खाली
च	Cha	and	और	व
मूलानि	Mulaani	the roots	अहंता, ममता और वासनारुप जड़ें	(अहंता, ममता आणि वासनारुप) मुळें
अनुसंततानि	Anu-santataani	are stretched forth	सभी लोकों में व्याप्त हो रही हैं	(सर्व लोकांत) पसरलेली आहेत
कर्मानुबन्धीनि	Karma-nubandhini	originating action	कर्मों के अनुसार बाँधनेवाली	कर्मांशी संबंध ठेवणारी
मनुष्यलोके	Manushya-loke	in the world of men	पृथ्वीतल पर मनुष्यलोक में	मनुष्यलोकांत

अन्वय :- तस्य गुणप्रवृद्धाः विषयप्रवालाः शाखाः ऊर्ध्वम् प्रसृताः (सन्ति) अधः च मनुष्यलोके कर्मानुबन्धीनि मूलानि अनुसंततानि (सन्ति) ॥ १५ - २ ॥

English translation:-

Below and above spread its branches, nourished by the Satva-Raja-Tama Gunas; sense objects are its sprouts; and roots are stretched below as actions binding men, in the world.

हिन्दी अनुवाद :-

उस संसारवृक्ष की तीनों गुणोंरुप जल के द्वारा बढ़ी हुई एवं विषय भोग-रुप कोंपलोंवाली देव मनुष्य और तिर्यक् आदि योनिरुप शाखाएँ नीचे और ऊपर सर्वत्र फैली हुई हैं तथा पृथ्वीतल पर मनुष्यलोक में कर्मों के अनुसार बाँधनेवाली अहंता, ममता और वासनारुप जड़ें भी नीचे और ऊपर सभी लोकों में व्याप्त हो रही हैं।

मराठी भाषान्तर :-

त्या संसारवृक्षाच्या शाखा सत्व, रज व तम गुणांनी वाढलेल्या आहेत. विषय हे त्या शाखांचे कोमल पल्लवांकुर आहेत. त्या संसारवृक्षाच्या (देव, मनुष्य आणि पशु-पक्षादी योनिरुप) फांद्या खालीवर सर्वत्र पसरलेल्या आहेत. तसेच मनुष्यलोकांत कर्मानुसार बांधणारी (अहंता, ममता आणि वासनारुप) मुळेही खालीवर सर्व लोकांत पसरलेली आहेत.

विनोबांची गीताई :-

वरी हि शाखा फुटल्या तयास हीं भोग-पानें गुण-पुष्ट ज़ेथें
खालीं हि मूळें निघती नवीन दृढावलीं कर्म बळें नृ-लोकीं ॥ १५ - २ ॥

न रुपम् अस्य इह तथा उपलभ्यते न अन्तः न च आदिः न च संप्रतिष्ठा ।

अश्वत्थम् एनम् सुविरूढमूलम् असङ्गशस्त्रेण दृढेन छित्वा ॥ १५ - ३ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
न	Na	not	नहीं	नाही
रुपम्	Rupam	form	स्वरुप (जैसा कहा है)	रूप
अस्य	Asya	its	इस संसारवृक्ष का	ह्या (संसारवृक्षाचे)
इह	Eha	here	यहाँ (विचारकाल में)	येथे
तथा	Tatha	as such	वैसा	तसे
उपलभ्यते	Uplabhyate	is perceived	पाया जाता	आढळते
न	Na	not	नहीं	नाही
अन्तः	AntaH	end	अन्त है	शेवट
न	Na	not	नहीं	नाही
च	Cha	and	और	तसेच
आदिः	AadiH	origin	आदि है	आरंभ
न	Na	not	नहीं	नाही
संप्रतिष्ठा	Sam-Pratishtha	firm foundation	अच्छी प्रकार की स्थिति है	उत्तम आधार
अश्वत्थम्	Ashvatham	Peepul tree	संसाररुप पीपल के वृक्ष को	(संसाररुपी अश्वत्थ) पिंपळ वृक्षाला
एनम्	Enam	this	इस	ह्याला
सुविरूढमूलम्	Suviroodha-mulam	firm rooted	अहंता, ममता और वासनारुप अति दृढ मूलोंवाले	अतिशय दृढ मुळे असणाऱ्या
असङ्गशस्त्रेण	Asanga-Shastrena	with the axe of non-attachment	वैराग्यरुप शस्त्रद्वारा	वैराग्यरुप शस्त्राने
दृढेन	Drudhena	strong	कठोर नीती से	अत्यंत बळकट
छित्वा	Chhitvaa	having cut	काटकर	कापून

अन्वय :- (यथा अयम् वृक्षः वर्णितः) तथा अस्य रुपम् इह न उपलभ्यते (यतः अस्य) आदिः न , अन्तः न च , संप्रतिष्ठा च न (उपलभ्यते अतः) सुविरूढमूलम् एनम् अश्वत्थम् दृढेन असङ्गशस्त्रेण छित्वा / (छिनत्तु) ॥ १५ - ३ ॥

English translation: -

Its (of this Asvattha / Peepul tree) form is not perceived here as such, neither it has end, nor it has origin, nor it has firm foundation. With the strong axe of non-attachment, one must cut this firm rooted Asvattha / Peepal tree.

हिन्दी अनुवाद :-

इस संसारवृक्ष का स्वरुप जैसा कहा है वैसा यहाँ विचारकाल में नहीं पाया जाता; क्योंकि न तो इसका आदि है और न तो अन्त है तथा न इसकी अच्छी प्रकार की स्थिति है ; इसलिये इस अहंता, ममता और वासनारुप अति दृढ मूलों वाले संसाररुप पीपल के वृक्ष को वैराग्यरुप शस्त्रद्वारा कठोर नीती से काटकर त्याग करना उचित होगा ।

मराठी भाषान्तर :-

या संसारवृक्षाचे स्वरूप जसे वर्णन केले आहे तसे येथे स्पष्टपणे आढळत नाही . कारण याला आरंभ नाही , शेवट नाही तसेच त्याला उत्तम आधारही नाही . म्हणून या (अहंता, ममता आणि वासनारूपी) अतिशय घट्ट मुळे असलेल्या संसाररुपी वृक्षाला वैराग्यरूपी बळकट शस्त्राने छाटावे .

विनोबांची गीताई :-

ह्याचें तसें रूप दिसे न येथें भासे न शेंडा बुडखा न खांदा

घेऊनि वैराग्य अभंग शस्त्र तोडूनियां हा दृढ-मूल वृक्ष ॥ १५ - ३ ॥

ततः पदम् तत् परिमार्गितव्यम् यस्मिन् गताः न निवर्तन्ति भूयः ।

तम् एव च आद्यम् पुरुषम् प्रपद्ये यतः प्रवृत्तिः प्रसृता पुराणी ॥ १५ - ४॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
ततः	TataH	then	उसके पश्चात्	त्यानंतर
पदम्	Padam	goal	परमपदरुप परमेश्वर को	परमपदरुप ईश्वराला
तत्	tat	that	उस	त्या
परि-मार्गितव्यम्	Parimaargi-tavyam	Should be sought for	भलीभाँति खोजना चाहिये	चांगल्या प्रकारे शोधून काढले पाहिजे
यस्मिन्	Yasmin	whither	जिस में	जेथे
गताः	GataH	gone	गये हुए पुरुष	गेलेले (पुरुष)
न	Na	not	नहीं	नाही
निवर्तन्ति	Nivartanti	return	लौटकर संसार में आते	परत येतात
भूयः	BhuyaH	again	वापस	पुन्हा
तम्	Tam	in that	उस	त्या
एव	Eva	even	केवल	च
च	Cha	and	और	आणि
आद्यम्	Aadyam	primeval	आदि	आदि
पुरुषम्	Purusham	Purusha / man	पुरुष नारायण के	पुरुषाला
प्रपद्ये	Prapadye	I seek refuge	मैं शरण हूँ	मी शरण आहे
यतः	YataH	whence	जिस परमेश्वर से	ज्या परमेश्वरापासून
प्रवृत्तिः	PravruttiH	activity	संसारवृक्ष की प्रवृत्ति	संसारप्रवृत्ति
प्रसृता	Prasruta	Streamed forth	विस्तार को प्राप्त हुई है	पसरली आहे
पुराणी	Puraani	ancient	पुरातन	प्राचीन

अन्वय :- (ततः यस्मिन् गताः मानवाः) भूयः न निवर्तन्ति , तत् पदम् परिमार्गितव्यम् । यतः पुराणी प्रवृत्तिः प्रसृता तम् एव आद्यम् पुरुषम् प्रपद्ये च ॥ १५ - ४ ॥

English translation: -

Then that (Bramha Padam) goal should be sought for. Those who reach that goal, they do not return again. I seek refuge in that Primeval Purusha / the Supreme from whom streamed forth the ancient / eternal activity.

हिन्दी अनुवाद :-

उसके पश्चात् उस परमपदरुप परमेश्वर को भलीभाँति खोजना चाहिये, जिसमें गये हुए पुरुष वापस लौटकर संसारमें नहीं आते और जिस परमेश्वर से इस पुरातन संसारवृक्ष की प्रवृत्ति विस्तार को प्राप्त हुई है, केवल उस आदि पुरुष नारायण के प्रति मैं शरण हूँ; इस प्रकार दृढ निश्चय करके उस परमेश्वर का मनन और चिन्तन करना चाहिये ।

मराठी भाषान्तर :-

त्यानंतर त्या परमपदरुप परमेश्वराला चांगल्या प्रकारे शोधून काढले पाहिजे . तेथे गेलेले पुरुष पुन्हा परत येत नाहीत . ज्या परमेश्वरापासून प्राचीन संसारप्रवाह पसरला आहे ; त्याच आदिपुरुष - परमेश्वराला मी शरण जातो .

विनोबांची गीताई :-

घ्यावा पुढें शोध तया पदाचा ज़ेथूनि मागें फिरणें नसे चि

द्यावी बुडी त्या परमात्म तत्वीं प्रवृत्ति ज़ेथें स्फुरली अनादि ॥ १५ - ४॥

निर्मानमोहाः जितसङ्गदोषाः अध्यात्मनित्याः विनिवृत्तकामाः ।

द्वन्द्वैः विमुक्ताः सुखदुःखसंज्ञैः गच्छन्ति अमूढाः पदम् अव्ययम् तत् ॥ १५ - ५ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
निर्मानमोहाः	Nirman-mohaH	free from pride and delusion	जिसका अभिमान और मोह नष्ट हो गया है	अभिमान आणि मोह नष्ट झालेले
जितसङ्गदोषाः	Jitasanga-doshaH	Victorious over the evil of attachment	जिन्होंने आसक्तिरुप दोष को जीत लिया है	आसक्तिरुप दोष जिंकलेले
अध्यात्मनित्याः	Adhyaatma-nityaaH	dwelling constantly in the Self	जिनकी परमात्मा के स्वरुप में नित्य स्थिति है	अध्यात्मचिंतनात नित्य तल्लीन असलेले
विनिवृत्तकामाः	Vinivrutta-kamaaH	Desires having completely turned away	जिनकी कामनाएँ पूर्णरुप से नष्ट हो गयी हैं	कामना समूळ नष्ट झालेले
द्वन्द्वैर्विमुक्ताः	DvandvaiH-vimuktaaH	free from the pairs of opposites	द्वन्द्वों से विमुक्त	द्वन्द्वातून विमुक्त
सुखदुःखसंज्ञैः	Sukha-DuHkha-SamdnyaiH	Known as pleasure and pain	सुख-दुःख नामक	सुख-दुःख नामक
गच्छन्ति	Gachchhanti	reach	प्राप्त होते हैं	प्राप्त करुन घेतात
अमूढाः	AmuDhaaH	The undeluded	ज्ञानीजन	ज्ञानीजन
पदम्	Padam	goal	परमपद को	परमपदाला
अव्ययम्	Avyayam	eternal	अविनाशी	अविनाशी
तत्	Tat	that	उस	त्या

अन्वय :- निर्मानमोहाः , जितसङ्गदोषाः , अध्यात्मनित्याः , विनिवृत्तकामाः , सुखदुःखसंज्ञैः द्वन्द्वैर्विमुक्ताः अमूढाः तत् अव्ययम् पदम् गच्छन्ति ॥ १५ - ५ ॥

English translation:-

The undeluded / unperplexed persons, free from pride and delusion, having conquered the evils of attachment, ever dwelling in the Self, desires being completely stilled, liberated from the pairs of opposites known as pleasure and pain, reach that Eternal Goal.

हिन्दी अनुवाद :-

जिस का मान और मोह नष्ट हो गया है, जिन्हों ने आसक्तिरुप दोष को जीत लिया है, जिन की परमात्मा के स्वरुप में नित्य स्थिति है, जिन की कामनाएँ पूर्णरुप से नष्ट हो गयी हैं; वे सुख-दुःख नामक द्वन्द्वों से विमुक्त ज्ञानीजन उस अविनाशी परमपद को प्राप्त होते हैं ।

मराठी भाषान्तर :-

अभिमान आणि मोह नष्ट झालेले, आसक्तिरुप दोष जिंकलेले , अध्यात्मचिंतनात नित्य तल्लीन असलेले , कामना समूळ नष्ट झालेले आणि सुख-दुःख नामक द्वन्द्वातून विमुक्त झालेले ज्ञानीजन, त्या अविनाशी श्रेष्ठ पदाला पोचतात.

विनोबांची गीताई :-

ज़े मान मोहांसह संग दोष ज़ाळूनि निर्वासन आत्म निष्ठ

द्वंद्वें न घेती सुख-दुःख मूळ ते प्राज्ञ त्या नित्य-पदीं प्रविष्ट ॥ १५ - ५ ॥

न तत् भासयते सूर्यः न शशाङ्कः न पावकः।

यद् गत्वा न निवर्तन्ते तत् धाम परमम् मम ॥ १५ - ६॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
न	Na	not	नहीं	नाही
तत्	Tat	that	उस (स्वयं प्रकाशित परमपद को)	त्या
भासयते	Bhaasayate	illumines	प्रकाशित कर सकता है	प्रकाशित करतो
सूर्यः	SuryaH	The Sun	सूर्य	सूर्य
न	Na	not	नहीं	नाही
शशाङ्कः	ShashankaH	the moon	चन्द्रमा	चन्द्र
न	Na	not	नहीं	नाही
पावकः	PaavakaH	fire	अग्नि	अग्नि
यद्	Yad	to which	जिस परमपद को	ज्या (परमपदाला)
गत्वा	Gatvaa	having gone	प्राप्त होकर	प्राप्त करुन घेतल्यावर
न	Na	not	नहीं	नाही
निवर्तन्ते	Nivartante	they return	लौटकर संसार में आते	(संसारात) परत येतात
तत्	Tat	that	वही	तेच
धाम	Dhaam	abode	निवास	स्थान
परमम्	Paramam	supreme	परम	सर्वश्रेष्ठ
मम	Mama	my	मेरा	माझे

अन्वय :- न सूर्यः , न शशाङ्कः , न पावकः (च) तत् (पदम्) भासयते । यद् गत्वा न निवर्तन्ते तत् मम परमम् धाम ॥ १५ - ६॥

English translation:-

That the Sun illumines not, nor the moon, nor fire; going whither they return not, that is My Supreme Abode.

हिन्दी अनुवाद :-

जिस परमपद को प्राप्त होकर , मनुष्य लौटकर संसार में नहीं आते , उस स्वयं प्रकाशित परमपद को न सूर्य प्रकाशित कर सकता है , न चन्द्रमा और न ही अग्नि ; वही मेरा परम निवास है ।

मराठी भाषान्तर :-

त्या स्वयंप्रकाशी परमपदाला सूर्य प्रकाशित करु शकत नाही , चन्द्रही नाही आणि अग्नीही नाही . ज्या परमपदाला पोचल्यावर ज्ञानीजन पुन्हा या संसारात परत येत नाहीत ; तेच माझे अंतिम सर्वश्रेष्ठ स्थान - स्वरुप आहे .

विनोबांची गीताई :-

न त्यास उजळी सूर्य कायसे अग्नि चंद्र हे

जेथ गेला न परते माझें अंतिम धाम तें ॥ १५ - ६॥

मम एव अंशः जीवलोके जीवभूतः सनातनः ।

मनः षष्टानि इन्द्रियाणि प्रकृतिस्थानि कर्षति ॥ १५ - ७॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
मम	Mama	my	मेरा	माझा
एव	Eva	even	ही	च
अंशः	AmshaH	portion	अंश है	अंश (आहे)
जीवलोके	Jeevaloke	in the World of life	इस देह में	(या) जगात
जीवभूतः	Jeeva-bhootaH	having become a soul	जीवात्मा	जीवात्मा
सनातनः	SanatanaH	eternal	यह सनातन	सनातन
मनः - षष्टानि	ManaH-Shashtani	with the mind as the sixth sense	मन और पाँचों (इन्द्रियों)	मन आणि पाच (इंद्रिये)
इन्द्रियाणि	Indriyani	the sense organs	इन्द्रियों को	इंद्रियांचे
प्रकृति-स्थानि	Prakruti-Sthani	abiding in the nature	इन प्रकृति में स्थित	या प्रकृतीत स्थित असणाऱ्या
कर्षति	Karshati	attracts / draws to itself	आकर्षण करता है	आकर्षित करतो

अन्वय :- (अस्मिन्) जीवलोके मम एव सनातनः अंशः जीवभूतः (अस्ति सः) प्रकृतिस्थानि मनः षष्ठानि इन्द्रियाणि कर्षति ॥ १५ - ७॥

English translation:-

An eternal portion of Me having become the soul in the World of living organisms attracts the five senses with the mind as the sixth sense, abiding in the Nature.

हिन्दी अनुवाद :-

इस देह में यह सनातन जीवात्मा मेरा ही अंश है और वही इन प्रकृति में स्थित मन और पाँचों इन्द्रियों को आकर्षण करता है।

मराठी भाषान्तर :-

या संसारात हा सनातन जीवात्मा माझाच अंश आहे आणि तोच प्रकृतीत स्थित असणाऱ्या मनाला आणि पाचही इंद्रियांना आकर्षित करतो.

विनोबांची गीताई :-

माझा चि अंश संसारीं झाला जीव सनातन
पंचेंद्रियें मनोयुक्त प्रकृतींतूनि खेंचितो ॥ १५ - ७ ॥

शरीरम् यत् अवाप्नोति यत् च अपि उत्क्रामति ईश्वरः ।

गृहीत्वा एतानि संयाति वायुः गन्धान् इव आशयात् ॥ १५ - ८ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
शरीरम्	Shariram	A body	शरीर को	शरीराला
यत्	Yat	when	जिस	ज्या
अवाप्नोति	Ava-Aap-Noti	obtains	प्राप्त होता है	प्राप्त करुन घेतो
यत्	Yat	when	जिस	ज्या
च	Cha	and	और	तसेच
अपि	Api	also	भी	सुद्धा
उत्-क्रामति	Ut-Kramati	leaves	त्याग करता है	त्याग करतो
ईश्वरः	IshvaraH	The Lord	देहादिका स्वामी जीवात्मा	देहादींचा स्वामी जीवात्मा
गृहीत्वा	Gruhitva	taking	ग्रहण करके	घेऊन
एतानि	Etaani	these	इस (मनसहित इंद्रियों को)	या (मनासह सहा इंद्रियांना)
संयाति	Sam-yaati	goes	जाता है	जातो
वायुः	VayuH	The Wind	वायु	वारा
गन्धान्	Gandhaan	The scents	गन्ध को	वास
इव	Eva	as	जैसे	जसा
आशयात्	Ashayaat	from their sources	गन्ध से स्थान से	पुष्पादिक स्थानांपासून

अन्वय :- यत् (एषः) ईश्वरः शरीरम् अवाप्नोति, अपि च यत् उत्क्रामति (तत्) वायुः आशयात् गन्धान् इव, एतानि गृहीत्वा संयाति ॥ १५ - ८ ॥

English translation:-

When the Lord obtains a body and when He leaves the body, He takes away these (the five senses and mind), and goes, as the Wind carries the scents from their sources.

हिन्दी अनुवाद :-

वायु गन्ध के स्थान से गन्ध को जैसे ग्रहण करके ले जाता है, वैसे ही देहादिका - स्वामी जीवात्मा भी जिस शरीरका त्याग करता है, उससे इन मनसहित इन्द्रियों को ग्रहण करके फिर जिस शरीर को प्राप्त होत है, उसमें जाता है।

मराठी भाषान्तर :-

वारा जसा पुष्पादिक स्थानांपासून वास स्वतः बरोबर घेऊन जातो ; तसाच देहादींचा स्वामी जीवात्मा ज्या शरीराचा त्याग करतो त्या शरीरातून या मनासह सहा इंद्रियांना घेऊन नवीन प्राप्त करुन घेतलेल्या शरीरात जातो.

विनोबांची गीताई :-

पुष्पादिकांतुनी वारा गंध खेंचूनि घेतसे

तशीं घेऊनि हीं सर्व देह सोडी धरी प्रभु ॥ १५ - ८ ॥

श्रोत्रम् चक्षुः स्पर्शनम् च रसनम् घ्राणम् एव च।

अधिष्ठाय मनः च अयम् विषयान् उपसेवते ॥ १५ - ९॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
श्रोत्रम्	Shrotram	the ear	श्रोत्र	कान
चक्षुः	ChakshuH	the eye	चक्षु	डोळा
स्पर्शनम्	Sparshanam	the sensory organ of touch i.e. skin	त्वचा को	त्वचा
च	Cha	and	और	आणि
रसनम्	Rasanam	the sensory organ of taste i.e. tongue	रसना	जीभ
घ्राणम्	Ghranam	the sensory organ of smell i.e. nose	घ्राण	नाक
एव	Eva	even	ही	तसेच
च	Cha	and	और	आणि
अधिष्ठाय	Adhishtaya	presiding over	आश्रय कर	आश्रय घेऊन
मनः	ManaH	the mind	मनको	मन
च	Cha	and	और	आणि
अयम्	Ayam	he	यह जीवात्मा	हा जीवात्मा
विषयान्	Vishyan	objects of the senses	विषयोंका	विषयांचा
उप-सेवते	Upa-Sevate	enjoys	सेवन करता है।	उपभोग घेतो

अन्वय :- अयम् (जीवः) श्रोत्रम् चक्षुः स्पर्शनम् च , रसनम् घ्राणम् मनः च एव अधिष्ठाय विषयान् उपसेवते ॥ १५ - ९ ॥

English translation:-

(The Lord) Presiding over the ear, the eye, the skin, the tongue and the nose, as also the mind, He experiences and enjoys various objects.

हिन्दी अनुवाद :-

यह जीवात्मा श्रोत्र, चक्षु और त्वचा को तथा रसना, घ्राण और मन को आश्रय कर अर्थात् इन सबके सहारे से ही विषयों का सेवन करता है।

मराठी भाषान्तर :-

हा जीवात्मा कान, डोळे, त्वचा, जीभ आणि नाक या पांचही इंद्रियांशी संबद्ध होणारे मन ; यांचा आश्रय घेऊन विषयांचा उपभोग घेतो .

विनोबांची गीताई :-

श्रोत्र जिह्वा त्वचा चक्षु घ्राण आणिक तें मन

ह्या सर्वांस अधिष्ठूनि ते ते विषय सेवितो ॥ १५ - ९ ॥

उत्क्रामन्तम् स्थितम् वा अपि भुञ्जानम् वा गुणान्वितम् ।

विमूढाः न अनुपश्यन्ति पश्यन्ति ज्ञानचक्षुषः ॥ १५ - १० ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
उत्-क्रामन्तम्	Udkramantam	departing	शरीर को छोडकर जाते हुए	शरीर सोडून जाणारा
स्थितम्	Sthitam	staying	शरीर मे स्थित हुए	शरीरात (स्थित) राहणारा
वा	Vaa	or	अथवा	अथवा
अपि	Api	also	भी	सुद्धा
भुञ्जानम्	Bhunjanam	enjoying	विषयों को भोगते हुए	(विषयांचा) उपभोग घेणारा
वा	Vaa	or	अथवा	अथवा
गुण-अनु-इ-तम्	Guna-Anu-Itam	United with the three Gunas	तीनों गुणों से युक्त हुए	गुणांनी युक्त असणारा
विमूढाः	VimudhaaH	the deluded	अज्ञानीजन	अज्ञानीजन
न	Na	not	नहीं	नाही
अनु-पश्यन्ति	Anu-Pashyanti	see	जानते	(निर्विकार आत्मस्वरुपाला) जाणतात
पश्यन्ति	Pashyanti	behold	तत्त्व से जानते हैं	जाणतात
ज्ञान-चक्षुषः	Dnyaan-chakshushaH	Those who possess the eye of knowledge	ज्ञानरुप नेत्रोंवाले	ज्ञानदृष्टी असणारे

अन्वय :- उत्क्रामन्तम् स्थितम् वा भुञ्जानम् गुणान्वितम् वा अपि विमूढाः न अनुपश्यन्ति , ज्ञानचक्षुषः पश्यन्ति ॥ १५ - १० ॥

English translation:-

The deluded do not see Him departing, staying and enjoying, while being joined with the three Gunas, but they, who possess the eye of wisdom, see Him.

हिन्दी अनुवाद :-

शरीरको छोडकर जाते हुए अथवा शरीर मे स्थित हुए अथवा विषयों को भोगते हुए इस प्रकार तीनों गुणों से युक्त हुए भी अज्ञानीजन नहीं जानते , केवल ज्ञानरूप नेत्रोंवाले, विवेकशील ज्ञानी ही तत्त्वसे जानते हैं ।

मराठी भाषान्तर :-

शरीर सोडून जाताना अथवा शरीरात स्थित राहताना तसेच विषयांचा उपभोग घेताना सुख , दुःख , मोह इत्यादी गुणांनी युक्त असताना या निर्विकार आत्मस्वरूपाला अविवेकी , अज्ञानीजन जाणत नाहीत . केवळ ज्ञानदृष्टी असलेले विवेकी , ज्ञानीजनच या निर्विकार आत्मस्वरूपाला तत्त्वतः जाणतात .

विनोबांची गीताई :-

सोडितो धरितो देह भोगितो गुण-युक्त हा
परी न पाहती मूढ ज्ञानी डोळस पाहती ॥ १५ - १० ॥

यतन्तः योगिनः च एनम् पश्यन्ति आत्मनि अवस्थितम् ।

यतन्तः अपि अकृतात्मानः न एनम् पश्यन्ति अचेतसः ॥ १५ - ११ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
यतन्तः	YatantaH	striving	यत्न करनेवाले	प्रयत्नशील
योगिनः	YoginaH	The Yogis	योगीजन भी	योगीजन
च	Cha	and	किंतु	सुद्धा
एनम्	Enam	this	इस आत्मा को	या जीवात्म्याला
पश्यन्ति	Pashyanti	see	तत्त्व से जानते हैं	तत्त्वतः जाणतात
आत्मनि	Aatmani	in the self	अपने हृदय में	आपल्या हृदयात
अवस्थितम्	Avasthitam	dwelling	स्थित	स्थित असणाऱ्या
यतन्तः	YatantaH	striving	यत्न करते रहने पर	प्रयत्नशील
अपि	Api	also	भी	सुद्धा
अ - कृत - आत्मानः	A-krut-AatmanaH	The unrefined	जिन्होंने अपने अन्तःकरण को शुद्ध नहीं किया है	अशुद्ध अन्तःकरणाचे
न	Na	not	नहीं	नाही
एनम्	Enam	this	इस आत्मा को	या जीवात्म्याला
पश्यन्ति	Pashyanti	see	जानते	तत्त्वतः जाणतात
अ-चेतसः	A-ChetasaH	The un-intelligent	अज्ञानीजन	अज्ञानीजन

अन्वय :- यतन्तः योगिनः आत्मनि अवस्थितम् एनम् पश्यन्ति , अचेतसः अकृतात्मानः च यतन्तः अपि एनम् न पश्यन्ति ॥ १५ - ११ ॥

English translation:-

Those who strive endued with Yoga, cognize Him dwelling in the self, however; the unrefined and unintelligent ones, even though striving, see Him not.

हिन्दी अनुवाद :-

यत्न करनेवाले योगीजन भी अपने हृदय में स्थित इस आत्मा को तत्व से जानते हैं ; किंतु जिन्होंने अपने अन्तःकरण को शुद्ध नहीं किया है , ऐसे अज्ञानीजन तो यत्न करते रहने पर भी इस आत्मा को नहीं जानते ।

मराठी भाषान्तर :-

प्रयत्नशील योगीजन , प्रयत्नांती आपल्या हृदयात स्थित असणाऱ्या , या जीवात्म्याला तत्त्वतः जाणतात. अशुद्ध अन्तःकरणाचे अज्ञानीजन मात्र , प्रयत्न करुन सुद्धा या जीवात्म्याला जाणू शकत नाहीत .

विनोबांची गीताई :-

योगी यत्न बळें ह्यास पाहती हृदयीं स्थित
चित्त हीन अशुध्दात्मे प्रयत्नें हि न पाहति ॥ १५ - ११ ॥

यद् आदित्यगतम् तेजः जगत् भासयते अखिलम् ।

यत् चन्द्रमसि यत् च अग्नौ तत् तेजः विद्धि मामकम् ॥ १५ - १२॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
यद्	Yad	which	जो	जे
आदित्य-गतम्	Aaditya-Gatam	residing in The Sun	सूर्य में स्थित	सूर्यात असणारे
तेजः	TejaH	light	तेज	तेज
जगत्	Jagat	the World	जगत् को	विश्वाला
भासयते	Bhaasayate	illumines	प्रकाशित करता है	प्रकाशित करते
अखिलम्	Akhilam	whole	सम्पूर्ण	सर्व
यत्	Yat	which	जो	जे
चन्द्रमसि	Chandra-masi	in the moon	चन्द्रमा में है	चंद्रातील
यत्	Yat	which	जो	जे
च	Cha	and	तथा	तसेच
अग्नौ	Agnau	in the fire	अग्नि में है	अग्नीत
तत्	Tat	that	उसको तू	ते
तेजः	TejaH	light	तेज	तेज
विद्धि	Viddhi	know	जान	तू जाण
मामकम्	Maa-makam	mine	मेरा ही	माझेच

अन्वय :- यद् आदित्यगतम् तेजः अखिलम् जगत् भासयते, यत् च चन्द्रमसि यत् च अग्नौ (स्थितम् अस्ति) तत् मामकम् तेजः (अस्ति इति त्वम्) विद्धि ॥ १५-१२॥

English translation:-

The light which is residing in the Sun illumines the whole World, that which is in the moon and in the fire – know that light to be Mine.

हिन्दी अनुवाद :-

सूर्य में स्थित जो तेज सम्पूर्ण जगत् को प्रकाशित करता है तथा जो तेज चन्द्रमा में है और जो अग्नि में है; उसको तू, मेरा ही तेज जान।

मराठी भाषान्तर :-

सूर्यांत स्थित असणारे जे तेज सर्व विश्वाला प्रकाशित करते, जे तेज चंद्रात आहे तसेच जे तेज अग्नीत आहे; ते तेज माझेच आहे असे तू जाण.

विनोबांची गीताई :-

सूर्यांत ज़ळतें तेज ज़ें विश्व उज़ळीतसे

तसें चंद्रांत अग्नींत ज़ाण माझें चि तेज तें ॥ १५-१२॥

गाम् आविश्य च भूतानि धारयामि अहम् ओजसा ।

पुष्णामि च ओषधीः सर्वाः सोमः भूत्वा रसात्मकः ॥ १५ - १३ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
गाम्	Gam	the earth	पृथ्वी में	पृथ्वीत
आविश्य	Aavishya	permeating	प्रवेश करके	प्रवेश करुन
च	Cha	and	और	आणि
भूतानि	Bhootani	all beings	सब भूतों को	सर्व प्राण्यांना
धारयामि	Dhaarayaami	support	धारण करता हूँ	धारण करतो
अहम्	Aham	I	मैं (ही)	मी
ओजसा	Ojasaa	by my energy	अपनी शक्ति से	स्वसामर्थ्याने
पुष्णामि	PushNami	nourish	पुष्ट करता हूँ	पोषण करतो
च	Cha	and	और	आणि
ओषधीः	OshadheeH	the herbs	ओषधियों को अर्थात् वनस्पतियों को	वनस्पतींना
सर्वाः	SarvaaH	all	सम्पूर्ण	सर्व
सोमः	SomaH	moon	चन्द्रमा	चन्द्र
भूत्वा	Bhootva	having become	होकर	होऊन
रसात्मकः	Rasaa-tmakaaH	liquid / watery	रसस्वरूप अर्थात् अमृतमय	रसरुप

अन्वय :- अहम् च गाम् आविश्य भूतानि ओजसा धारयामि । रसात्मकः सोमः भूत्वा सर्वाः ओषधीः पुष्णामि ॥ १५ - १३ ॥

English translation:-

Entering the earth I support all beings by my energy; and having become the sapid moon I nourish all herbs.

हिन्दी अनुवाद :-

और मैं ही पृथ्वी में प्रवेश करके अपनी शक्ति से सब भूतों को धारण करता हूँ और रसस्वरूप अर्थात् अमृतमय चन्द्रमा होकर सम्पूर्ण ओषधियों को अर्थात् वनस्पतियों को पुष्ट करता हूँ ।

मराठी भाषान्तर :-

आणि मीच पृथ्वीत प्रवेश करुन स्वसामर्थ्याने सर्व प्राण्यांना धारण करतो आणि रसरुप अर्थात अमृतमय चन्द्र होऊन सर्व वनस्पतींचे पोषण करतो.

विनोबांची गीताई :-

आकर्षण बळें भूतें धरा रूपें धरीतसें

वनस्पतींस मी सोम पोषितों भरिला रसें ॥ १५ - १३ ॥

अहम् वैश्वानरः भूत्वा प्राणिनाम् देहम् आश्रितः ।

प्राणापानसमायुक्तः पचामि अन्नम् चतुर्विधम् ॥ १५ – १४ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
अहम्	Aham	I	मैं (ही)	मी (च)
वैश्वानरः	Vaish-vanaraH	the fire	वैश्वानर अग्निरूप	जाठर - अग्नि
भूत्वा	Bhootva	having become	होकर	होऊन
प्राणिनाम्	Praani-naam	of living beings	सब प्राणियों के	(सर्व) प्राण्यांच्या
देहम्	Deham	the body	शरीर में	शरीराचा
आश्रितः	AashritaH	abiding	स्थित रहनेवाला	आश्रय केलेला
प्राण	PraaNa	Prana	प्राण	प्राण
अपान	Apana	Apana	अपान	अपान
समायुक्तः	Sama-YuktaH	associated with	से संयुक्त	यांनी युक्त होऊन
पचामि	Pachaami	I digest	पचाता हूँ	पचवितो
अन्नम्	Annam	food	अन्न को	अन्न
चतुर्विधम्	Chatur-vidham	four kinds of	चार प्रकार के	चार प्रकारचे

अन्वय :- अहम् प्राणिनाम् देहम् आश्रितः प्राणापानसमायुक्तः वैश्वानरः भूत्वा चतुर्विधम् अन्नम् पचामि ॥ १५ - १४ ॥

English translation:-

Abiding in the body of living beings as the fire within; associated with Prana and Apana, I digest the four kinds of food. The four kinds are one that is chewed, one that is drunk, one that is licked and one that is sucked / extracted.

हिन्दी अनुवाद :-

मैं ही सब प्राणियों के शरीर में स्थित रहनेवाला प्राण और अपान से संयुक्त वैश्वानर अग्निरूप होकर चार प्रकार के अन्न को पचाता हूँ ।

मराठी भाषान्तर :-

मीच प्राण्यांच्या देहाचा आश्रय केलेला जाठर अग्नि बनून , प्राण आणि अपान यांनी युक्त होऊन , चार प्रकारचे (चावण्यास , पिण्यास , चाटण्यास आणि चोखण्यास योग्य) अन्न पचवितो .

विनोबांची गीताई :-

मी वैश्वानर रूपानें प्राणि देहांत राहुनी
अन्नें ती पचवीं चारी प्राणापानांस फुंकुनी ॥ १५ – १४ ॥

सर्वस्य च अहम् हृदि सन्निविष्टः मत्तः स्मृतिः ज्ञानम् अपोहनम् च ।

वेदैः च सर्वैः अहम् एव वेद्यः वेदान्त कृत् वेदवित् एव च अहम् ॥ १५ - १५ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
सर्वस्य	Sarvasya	of all	सब प्राणियों के	सर्व प्राण्यांच्या
च	Cha	and	तथा	तसेच
अहम्	Aham	I	मैं (ही)	मी
हृदि	Hrudi	in the heart	हृदय में	हृदयात
सन्निविष्टः	Sam-NivishataH	seated	अन्तर्यामी रूप से स्थित हूँ	प्रवेश केला आहे
मत्तः	MattaH	From me	मुझसे (ही)	माझ्यापासून
स्मृतिः	SmrutiH	memory	स्मृति	स्मरण
ज्ञानम्	Dnyaanam	knowledge	ज्ञान	ज्ञान
अपोहनम्	Apohanam	their absence	विचार से बुद्धि के दोषों को हटाना	विस्मरण
च	Cha	and	और	आणि
वेदैः	VedaiH	by the Vedas	वेदोंद्वारा	वेदांचेद्वारे
च	Cha	and	और	आणि
सर्वैः	SarvaiH	by all	सब	सर्व
अहम्	Aham	I	मैं	मी
एव	Eva	even	ही	केवळ
वेद्यः	VedyaH	to be known	जानने के योग्य हूँ	जाणण्यास योग्य
वेदान्त-कृत्	Vedanta- Krut	author of Vedanta	वेदान्त का कर्ता	वेदान्ताचा कर्ता
वेद-वित्	Veda-Vit	The knower of Veda	वेदों को जाननेवाला	वेद जाणणारा
एव	Eva	even	ही हूँ	च
च	Cha	and	और	आणि
अहम्	Aham	I	मैं (ही)	मी

अन्वय :- अहम् सर्वस्य हृदि सन्निविष्टः (अस्मि), मत्तः (सर्वस्य) स्मृतिः ज्ञानम् अपोहनम् च (भवति) अहम् च एव सर्वैः वेदैः वेद्यः (अस्मि) अहम् च एव वेदान्त कृत् वेदवित् च (अस्मि) ॥ १५ - १५ ॥

English translation:-

I am seated in the hearts of all. From me originate memory, knowledge as well as their loss. I am verily that which has to be known by all the Vedas. I am indeed the author of all the Vedanta as well as the knower of the Vedas.

हिन्दी अनुवाद :-

मैं ही सब प्राणियों के हृदय में अन्तर्यामी रूप से स्थित हूँ तथा मुझ से (ही) स्मृति, ज्ञान और विचार से बुद्धि के दोषों को हटाना होता है, और सब वेदोंद्वारा मैं ही जानने के योग्य हूँ तथा वेदान्त का कर्ता और वेदों को जाननेवाला भी मैं ही हूँ ।

मराठी भाषान्तर :-

मीच सर्व प्राण्यांच्या हृदयात उत्तम प्रकारे आत्मरूपाने प्रवेश केला आहे आणि माझ्यापासूनच स्मरण , ज्ञान आणि त्यांचे विस्मरण होते . सर्व वेदांच्याद्वारा जाणण्यास मीच योग्य आहे . तसेच वेदांताचा कर्ता आणि वेदांना जाणणाराही मीच आहे .

विनोबांची गीताई :-

सर्वांतरीं मी करितों निवास देतों स्मृति ज्ञान विवेक सर्वां
समग्र वेदांस हि मी चि वेद्य वेद-ज्ञ मे वेद-रहस्य-कर्ता ॥ १५ - १५ ॥

द्वौ इमौ पुरुषौ लोके क्षरः च अक्षरः एव च ।

क्षरः सर्वाणि भूतानि कूटस्थः अक्षरः उच्यते ॥ १५ - १६ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
द्वौ	Dvau	two	दो प्रकार के	दोन
इमौ	Imau	these	ये	हे
पुरुषौ	Purushau	Purushas	पुरुष हैं	पुरुष
लोके	Loke	in the World	इस संसार में	या संसारात
क्षरः	KsharaH	the perishable	नाशवान्	नाशवंत
च	Cha	and	और	आणि
अक्षरः	A- KsharaH	the imperishable	अविनाशी	अविनाशी
एव	Eva	even	भी	च
च	Cha	and	और	आणि
क्षरः	KsharaH	the perishable	नाशवान्	नाशवंत
सर्वाणि	Sarvaani	all	सम्पूर्ण	सर्व
भूतानि	Bhootani	beings	भूतप्राणियों के शरीर	प्राणिमात्र
कूटस्थः	KutasthaH	the immutable	जीवात्मा	जीवात्मा
अक्षरः	A- KsharaH	the imperishable	अविनाशी	अविनाशी
उच्यते	Uchyate	is called	कहा जाता है	म्हटला जातो

अन्वय :- (अस्मिन्) लोके क्षरः अक्षरः च एव इमौ द्वौ पुरुषौ (स्तः) सर्वाणि भूतानि क्षरः , कूटस्थः च अक्षरः उच्यते ॥ १५ - १६ ॥

English translation:-

There are two Purushas in the World – the Perishable and the Imperishable. All living beings are Perishable but the Immutable is called as the Imperishable.

हिन्दी अनुवाद :-

इस संसार में नाशवान् और अविनाशी भी ये दो प्रकार के पुरुष हैं। सम्पूर्ण भूतप्राणियों के शरीर तो नाशवान् और जीवात्मा अविनाशी कहा जाता है।

मराठी भाषान्तर :-

या संसारात नाशवंत आणि अविनाशी असे दोन प्रकारचे पुरुष आहेत. त्यामध्ये सर्व प्राणिमात्रांची शरीरे नाशवंत (क्षर - पुरुष) आणि जीवात्मा अविनाशी (अक्षर - पुरुष) म्हटला जातो.

विनोबांची गीताई :-

लोकीं पुरुष ते दोन क्षर आणिक अक्षर
क्षर सर्व चि हीं भूतें स्थिर अक्षर बोलिला ॥ १५ - १६ ॥

उत्तमः पुरुषः तु अन्यः परमात्मा इति उदाहृतः ।

यः लोकत्रयम् आविश्य बिभर्ति अव्ययः ईश्वरः ॥ १५ - १७ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
उत्तमः	UttamaH	The Supreme	उत्तम	उत्तम
पुरुषः	PurushaH	Purusha	पुरुष	पुरुष
तु	Tu	but	तो	परंतु
अन्यः	AnyaH	another	अन्य ही है	वेगळाच
परम्-आत्मा	Param Atma	The Highest Self	परमात्मा	परमात्मा
इति	Iti	thus	इस प्रकार	या प्रकारचा
उद्-आहृतः	Ud-AahrutaH	Called	कहा जाता है	म्हटला जातो
यः	YaH	who	जो	जो
लोक-त्रयम्	Loka-Trayam	The three worlds	स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल इन तीनों लोकों में	स्वर्ग पृथ्वी आणि पाताळ या तीन लोकांमध्ये
आविश्य	Aavishya	pervading	प्रवेश कर के	प्रवेश करुन
बिभर्ति	Bibharti	sustains	सबका धारण पोषण करता है एवं	सर्वांचे धारण आणि पोषण करतो
अव्ययः	AvyayaH	The In-destructible	अविनाशी	अविनाशी
ईश्वरः	IshvaraH	The Lord	परमेश्वर	परमेश्वर

अन्वय :- उत्तमः पुरुषः तु अन्यः (अस्ति) , (सः) परमात्मा इति उदाहृतः यः अव्ययः ईश्वरः लोकत्रयम् आविश्य (तत्) बिभर्ति ॥ १५ - १७ ॥

English translation:-

But distinct is the Supreme Purusha called the Highest Self, the indestructible Lord, who pervades and sustains the three worlds namely the heaven, the earth and the hell.

हिन्दी अनुवाद :-

उत्तम पुरुष तो अन्य ही है , जो स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल इन तीनों लोकों में प्रवेश कर , सबका धारण पोषण करता है ; एवं अविनाशी परमेश्वर और परमात्मा इस प्रकार कहा जाता है ।

मराठी भाषान्तर :-

परंतु या दोन्ही पुरुषांपेक्षा उत्तम पुरुष तर आगळाच आहे . त्यालाच परमात्मा म्हटले जाते . तोच अविनाशी परमेश्वर असून , तो तीन्ही लोकांत प्रवेश करुन सर्वांचे धारण - पोषण करतो .

विनोबांची गीताई :-

म्हणती परमात्मा तो तिज़ा पुरुष उत्तम

विश्व पोषक विश्वात्मा ज़ो विश्वेश्वर अव्यय ॥ १५ - १७ ॥

यस्मात् क्षरम् अतीतः अहम् अक्षरात् अपि च उत्तमः ।

अतः अस्मि लोके वेदे च प्रथितः पुरुष उत्तमः ॥ १५ - १८ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
यस्मात्	Yasmat	As	क्योंकि	ज्याअर्थी
क्षरम्	Ksharam	the perishable	नाशवान् जड़वर्ग क्षेत्र से तो सर्वथा	नाशवंत
अतीतः	AteetaH	transcend	अतीत हूँ	पलीकडचा
अहम्	Aham	I	मैं	मी
अक्षरात्	Aksharat	Than the imperishable	अविनाशी जीवात्मा से	शाश्वतापेक्षा
अपि	Api	also	भी	सुद्धा
च	Cha	and	और	आणि
उत्तमः	UttamaH	the best	उत्तम हूँ	उत्तम
अतः	AtaH	therefore	इसलिये	त्याअर्थी
अस्मि	Asmi	I am	मैं हूँ	मी आहे
लोके	Loke	in the World	लोक में	लोकांत
वेदे	Vede	in the Veda	वेद में भी	वेदांत
च	Cha	and	और	आणि
प्रथितः	PrathitaH	declared	प्रसिद्ध	प्रसिद्ध
पुरुष-उत्तमः	Purusha-UttamaH	the highest Purusha	पुरुषोत्तम नाम से	पुरुषोत्तम या नावाने

अन्वय :- यस्मात् अहम् क्षरम् अतीतः , अक्षरात् अपि च उत्तमः (अस्मि), अतः (अहम्) लोके वेदे च पुरुष - उत्तमः (इति) प्रथितः अस्मि ॥ १५ - १८ ॥

English translation:-

As I transcend the Perishable and I am even above the Imperishable, therefore I am known in the World and in the Veda as "Purushottama" i.e. the highest Purusha (man).

हिन्दी अनुवाद :-

क्योंकि मैं नाशवान् जड़वर्ग क्षेत्र से तो सर्वथा अतीत हूँ और अविनाशी जीवात्मा से भी उत्तम हूँ; इसलिये लोक में और वेद में भी " पुरुषोत्तम " नामसे प्रसिद्ध हूँ ।

मराठी भाषान्तर :-

मी परमात्मा, क्षर पुरुषाच्या अतीत आणि अक्षर पुरुषापेक्षा उत्तम असल्यामुळे या लोकांत आणि वेदांत " पुरुषोत्तम " या नावाने प्रसिद्ध आहे .

विनोबांची गीताई :-

मी क्षरा अक्षराहूनी वेगळा आणि उत्तम
वेद लोक म्हणे मातें म्हणूनि पुरुषोत्तम ॥ १५ - १८ ॥

यः माम् एवम् असंमूढः जानाति पुरुषोत्तमम् ।

सः सर्ववित् भजति माम् सर्वभावेन भारत ॥ १५ - १९ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
यः	YaH	who	जो	जो
माम्	Maam	me	मुझ को	मला
एवम्	Evam	thus	इसप्रकार तत्व से	अशाप्रकारे
असंमूढः	A-sammudhaH	undeluded	ज्ञानी पुरुष	ज्ञानी पुरुष
जानाति	Jaanati	knows	जानता है	जाणतो
पुरुष-उत्तमम्	Purusha-Uttamam	The Supreme Purusha	पुरुषोत्तम	पुरुषोत्तम
सः	SaH	he	वह	तो
सर्ववित्	Sarvavit	all knowing	सर्वज्ञ पुरुष	सर्वज्ञ (पुरुष)
भजति	Bhajati	worships	पूजा करता है	भजतो
माम्	Maam	me	मेरी ही	मला
सर्वभावेन	Sarva-bhaaven	With his whole being	तन, मन और धन सर्व भाव से निरन्तर	सर्वभावाने
भारत	Bharat	O Arjun!	हे अर्जुन !	हे भरत कुलोत्पन्न अर्जुना !

अन्वय :- हे भारत ! यः असंमूढः माम् पुरुषोत्तमम् एवम् जानाति, सः सर्ववित् (भूत्वा) माम् सर्वभावेन भजति ॥ १५ - १९ ॥

English translation:-

He, who is undeluded, knows Me as the Highest Self – he knows all, O Arjun, and he worships Me with all his heart.

हिन्दी अनुवाद :-

हे अर्जुन ! जो ज्ञानी पुरुष मुझ को इसप्रकार तत्व से पुरुषोत्तम जानता है वह सर्वज्ञ पुरुष; तन, मन और धन सर्व भाव से मेरी ही पूजा करता है ।

मराठी भाषान्तर :-

हे भरत-कुलोत्पन्न अर्जुना ! जो मोहमुक्त, ज्ञानी पुरुष माझ्या पुरुषोत्तम स्वरुपाला तत्त्वतः जाणतो; तो सर्वज्ञ पुरुष सर्व भावाने मलाच - परमेश्वराला भजतो.

विनोबांची गीताई :-

मोह सारूनि ज़ो दूर ज़ाणे मी पुरुषोत्तम
सर्वज्ञ तो सर्व भावें सर्व रूपीं भज़े मज़ ॥ १५ - १९ ॥

इति गुह्य तमम् शास्त्रम् इदम् उक्तम् मया अनघ ।

एतत् बुद्-ध्वा बुद्धिमान् स्यात् कृत कृत्यः च भारत ॥ १५ - २० ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
इति	Iti	Thus	इस प्रकार	अशाप्रकारचे
गुह्य- तमम्	Guhya-Tamam	most secret	अति रहस्ययुक्त गोपनीय	अति गोपनीय
शास्त्रम्	Shaastram	science	शास्त्र	शास्त्र
इदम्	Idam	this	यह	हे
उक्तम्	Uktam	has been taught	कहा गया	सांगितले
मया	Maya	by me	मेरे द्वारा	मी
अनघ	Anagha	O sinless one	निष्पाप	निष्पाप
एतत्	Etat	this	इसको	हे
बुद् - ध्वा	Buddhva	knowing	तत्त्व से जानकर मनुष्य	जाणून
बुद्धिमान्	Buddhi-maan	wise	ज्ञानवान्	ज्ञानवान
स्यात्	Syaat	becomes	हो जाता है	होईल
कृतकृत्यः	Kruta-KrutyaH	Who has accomplished all the duties	कृतार्थ	कृतार्थ
च	Cha	Cha	और	आणि
भारत	Bhaarat	O Arjuna!	हे अर्जुन !	हे भरत कुलोत्पन्न अर्जुना !

अन्वय :- हे अनघ ! इति गुह्य - तमम् , इदम् शास्त्रम् मया उक्तम् । हे भारत ! एतत् बुद्-ध्वा (जीवः) बुद्धिमान् कृत कृत्यः च स्यात् ॥ १५ - २० ॥

English translation:-

Thus O Sinless one, has this most profound teaching has been imparted by me to you. Knowing this, a man becomes enlightened one, O Arjun, and all his duties are accomplished.

हिन्दी अनुवाद :-

हे निष्पाप अर्जुन ! इस प्रकार यह अति रहस्ययुक्त गोपनीय शास्त्र , मेरे द्वारा कहा गया । इसको तत्त्व से जानकर , मनुष्य ज्ञानवान् और कृतार्थ हो जाता है ।

मराठी भाषान्तर :-

हे निष्पाप भरत - कुलोत्पन्न अर्जुना ! असे हे अति गोपनीय शास्त्र , मी तुला सांगितले आहे . याचे तत्त्वतः ज्ञान करुन घेतल्यावर कोणीही साधक ज्ञानवान आणि कृतार्थ होतो.

विनोबांची गीताई :-

अत्यंत गूढ हें शास्त्र निर्मळा तुज बोलिलों
हें जाणे तो बुद्धिमंत होईल कृत कृत्य चि ॥ १५ - २० ॥

ॐ तत् सत् इति श्रीमद् भगवद् गीतासु उपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायाम् योगशास्त्रे

श्रीकृष्णार्जुनसंवादे पुरुषोत्तमयोगो नाम पञ्चदशोऽध्यायः ॥

हरिः ॐ तत् सत् । हरिः ॐ तत् सत् । हरिः ॐ तत् सत् ।

Om that is real. Thus, in the Upanishad of the glorious Bhagwad Geeta, the knowledge of Brahman, the Supreme, the science of Yoga and the dialogue between Shri Krishna and Arjuna this is the fifth discourse designated as "the Yoga of Supreme Being".

पंधराव्या अध्यायाचा एका श्लोकात मथितार्थ

ऊर्धीं मूळ तळीं अपार पसरे अश्वत्थ संसार हा ।

छेदाया दृढ शस्त्र एकचि तया निःसंगता भूरुहा ॥

ऐसें ओळखुनी क्षराक्षर मला जे पूजिती भारता ।

ते होती कृतकृत्य गुह्य कळुनी पावोनी सर्वज्ञता ॥ १५॥

गीता सुगीता कर्तव्या किम् अन्यैः शास्त्रविस्तरैः ।

या स्वयम् पद्मनाभस्य मुखपद्माद् विनिःसृता ॥

गीता सुगीता करण्याजोगी आहे म्हणजेच गीता उत्तम प्रकारे वाचून तिचा अर्थ आणि भाव अन्तःकरणात साठवणे हे कर्तव्य आहे. स्वतः पद्मनाभ भगवान् श्रीविष्णूंच्या मुखकमलातून गीता प्रगट झाली आहे. मग इतर शास्त्रांच्या फाफटपसाऱ्याची जरूरच काय ?

- श्री महर्षी व्यास

विनोबांची गीताई :-

गीताई माउली माझी तिचा मी बाळ नेणता ।

पडतां रडतां घेई उचलूनि कडेवरी ॥